Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 12 | ISSUE : 2 | FEBRUARY 2026

मारवाड़ के प्रमुख उद्योग धन्धे (18 वी -19 वी शताब्दी)

डॉ. ममता रानी [1]

[1] **अतिथि संकाय, वीर दुर्गादास कॉलेज, समदड़ी, बालोतरा.**

ABSTRACT:

18 वीं सदी में मारवाड़ के लोगो का प्रमुख व्यवसाय कृषि व पशु पालन प्रमुख था। लेकिन इन व्यवसायों के चलते उद्योग धन्धे भी स्थानीय लोगो में महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। विभिन्न उद्योग धन्धे स्थानीय, अन्त्रराज्यि व अन्तरदेशीय आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। प्रमुख उद्योग धन्धे सामान्य जनता की जरूरत पर ही आधारित थे जैसे - सूतली, रस्सी, टाटपट्टी, काष्ठ उद्योग, मिठाई आदि प्रमुख उद्योग थे।

KEYWORDS:

अन्तर्राज्य, अन्तरदेशीय, टाटपट्टी, काष्ठ ।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
25th February 2026	27th February 2026

परिचय

उद्योग धन्धे का अर्थ व्यवसायों, कारखानों या औधोगिक गतिविधियों से है, जो कच्चे माल का उपयोग करके लोक व्यवहार या बाजार के लिए पक्का सामान तैयार करते है। इसके लघु व बड़े स्तर के निर्माण कार्य शामिल है।

उद्योग धन्धों के प्रकार

उद्योग धन्धे का स्थानीय, अन्तर्राज्य व अन्तरप्रदेशीय आवश्यकताओं को पूर्ण करते है।

प्रथम वे उद्योग धन्धे है जो जरूरत के हिसाब से स्थानीय लोगो के द्वारा बनाये गय है। जिनका उद्देश्य सिर्फ जरूरत पूरी करना ही है जैसे सूतली, रस्सी, टाटपट्टी उद्योग, काष्ठ उद्योग, मिठाई उद्योग आदि प्रमुख उद्योग जरूरत की पूर्ति करने हेतु है।

दूसरे वे उद्योग है जो स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद राजपूताना के अन्य राज्यों में भी निर्यात किया जाता था जैसे मोटा सूती उद्योग, ऊनी वस्त्र उद्योग, कागज उद्योग आदि।

कुछ उद्योग ऐसे भी है जिनका उत्पादन मारवाड़ के बाहर भी निर्यात होता था। जैसे नमक उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग, संगमरमर उद्योग[1], मलमल जैसे महीन कपड़े की बुनाई कोटा से, कोटा की चुनरी व कानूमल, बूंदी का डोरिया व अंगोछो की बुनाई, देलवाड़, अजमेर का सूती कपड़ा, रंगाई व छपाई के लिए जयपुर व सांगानेर, बारा में चूनड़ी, बीकानेर, जैसलमेर शेखावटी में ऊनी उद्योग आदि प्रसिद्व थे। इसी तरह धातु, हाथी दांत, काष्ठ, इत्र व चमड़े का उद्योग मारवाड़ के अलग-अलग भागो में अच्छी अवस्था में था ।[2]

नैणसी की मारवाड़ रे परगना री विगत में अलग-अलग जातियों के द्वारा अलग-अलग काम करने का उल्लेख मिलता है जैसे लोहे के औजार व हथियार लुहार के द्वारा, कपड़े बनाने का कार्य भांभी जाति के लोग, चमड़े का कार्य व चमड़े का सामान विभिन्न जातियों द्वारा किया जाता था जैसे साटिया, रेगर, खटीक, व मोची, आभूषण बनाने का सुनार, कपड़ो की रंगाई छपाई का कार्य छीपा जाति, कांसे के बर्तन बनाने का कंसारा व ठठेरा जाति के लोग, हलालखोर (मांस का धंधा करने वाला आदि विभिन्न जातियों का उल्लेख नैणसी के द्वारा किया गया है।[3]

प्रमुख उद्योग

नमक उद्योग

मारवाड़ की आर्थिक स्थिति का प्रमुख व्यवसाय नमक उद्योग ही था। मारवाड़ के प्रमुख उद्योगों में नमक उद्योग सबसे प्रमुख था। इस उद्योग से कई लोगो को रोजगार भी मिलता था। नमक को तैयार करने व बेचने के लिए हजारो की संख्या में श्रमिकों, बंजारो व व्यापारियों को रोजगार मिलता था।4 मारवाड़ के सांभर, डीडवाणा, पचपदरा, फलौदी, नावा, लूणी, बिलाड़ा के नमक उद्योग के प्रमुख केन्द्र थे। इन सब में सांभर में सबसे उच्च किस्म का नमक प्राप्त होता था।[5] कर्नल टोड ने भी बताया है कि नमक के उद्योग से 7,15,000 रूपयों की आय होती थी।[6]

मारवाड़ में नमक तीन विधियों से तैयार किया जाता था, प्रथम विधि नमक की झील के पाट में नमक बनाया जाता था जिन्हें आगार कहा जाता था। मीठे नमक के नमकसारों को दरीबा कहते थे और खारे नमक के नमक सारो को आगार कहते है।[7]

द्वितीय तरीके से नमक झील से बाहर निकालकर गड्ढों में भरा जाता था। फिर धूप से सुखाया जाता था तथा तीसरी प्रकार की विधि में झील के दोनो किनारों पर इकट्ठा कर के सुखाया जाता था। मारवाड़ मे दो प्रकार का नमक होता था। बिलाड़ा, पिचियाक, माल को सणी में लूणी नदी के खार से खारा नमक तथा सांभर, डीडवाना, पचपदरा से मीठा नमक उपलब्ध होता था।

सांभर झील का नमक अत्यधिक प्रसिद्व था। सांभर प्रदेश जयपुर व जोधपुर दोनो राज्यों का अधिकार था।

नमक की झीलों की सुरक्षा का विशेष ध्यान दिया जाता था। सांभर का दरोगा नामक अधिकारी अन्य व्यापारियों को नमक उत्पन्न करने के लिए प्रोत्साहित करता था।

संवत 1821 में नावा से भरकर परबतसर की सीमा से गुजरने पर 100 पला पर 13 रूपये राहदारी कर लगता था।[8]

बहियों मे नमक चोरी का वर्णन भी मिलता है। डीडवाणा की कचेडी मे कटला बाजार से नमक चोरी होने का उल्लेख मिलता है।[9]

इस प्रकार 18 वी एवं 19 वीं सदी के पूर्वाद्व तक मारवाड़ सहित राजपूताना के सभी राज्यों में नमक उद्योग राज्य का प्रमुख उद्योग बना रहा और राज्यों को इससे काफी आय भी होती थी। लेकिन ब्रिटिश सरकार का नमक पर अधिकार होने से हजारो लोगो को काफी नुकसान भी हुआ।

सूती वस्त्र उद्योग

मारवाड़ में 17 वी व 18 वीं शताब्दी में सूती वस्त्र उद्योग प्रमुख रूप से उभर कर आया। उस

समय तक करघे का प्रयोग करके वस्त्र तैयार करते थे। 'कपड़ा कुतुहल' के कवि प्रयागदास ने लिखा है -

टुकड़ी रूपईया गजतणी, सुन्दर रहे न सुहाय।
पितम मंहुगा मोल री, सो दियौ मुख ल्यांय॥

इसमे मारवाड़ के देशी कपड़ों में सबसे प्रमुख मानी जाती है।[10]

मजमुए हालात में लिखा है कि देशी सूत की टुकड़ी जालोर परगने की मशहुर है।[11]

मारवाड़ के पाली मे मलमल व सूती वस्त्र बनाने मे प्रमुख शहर है।

पाली में जनसंख्या अधिक होने के कारण मजदूर आसानी से मिल जाते थे। यहाँ पर छींट, अंगोछे दुपट्टे व रजाई आदि रंगे व छपे जाते थे।[12]

जोधपुर का अखैमल एक प्रसिद्व दस्तकार था जिसको मसरू कपड़ा बनाने में महारत हासिल थी। जोधपुर के मारोठ व जालोर परगनो की देशी सूत की टूकड़ी बहुत प्रसिद्व थी।[13]

मारवाड़ रंगाई, छपाई व बंधेज के लिए प्रसिद्व था। चैकड़ीदार और लहरियेदार साफे, स्त्रियों के लिए रंग-बिरंगे दुपट्टे इस समुदाय द्वारा निपुणता एवं कौशल से बनाए जाते थे। रंगाई का का काम रंगरेज व नीलगर करते थे। रंगरेज का काम हिन्दू व मुसलमान दोनो ही करते थे। ये लोग विशेष अवसरों तीज, त्यौहारो पर विशेष प्रकार की भांते (डिजाइन) भी बनाते थे। पाली रंगाई छपाई में प्रमुख था। पोकरण की छींट, चून्दड़ी धोतिया तथा पगाडिया व देशी छींट प्रसिद्व है। पीपाड़ में रगाई-छपाई होती थी।

सूती वस्त्रों की बुनाई, रंगाई व छपाई के अतिरिक्त वस्त्रों को सजाने के लिए चटापटी व कढाई का काम भी किया जाता था। मारवाड़ में कपास का उत्पादन सोजत, मेड़ता, सांचोर, जालोर व जोधपुर के कुछ उपजाऊ क्षेत्रों मे होता था। इस प्रकार मारवाड़ की अर्थव्यवस्था में सूती वस्त्र उद्योग प्रमुख था।

ऊनी वस्त्र उद्योग

राजपूताना के बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर व शेखावटी क्षेत्रो में बहुत अच्छी किस्म की ऊन उपलब्ध होती थी। जिसमे दरियां, रंग, शॉल व कम्बल अच्छे बनते थे। मेड़ता व नागोर में ऊनी वस्त्र के प्रमुख उद्योग केन्द्र थे। नागौर में सादी व रंगीन दोनो ही कम्बल बनते थे तथा उन के कम्बल व खेस कसूमल रंग के रंगे जाते थे। कम्बल के लिए नागौर प्रसिद्व था।[14]

सनद परवाना बही में जोधपुर के राजपरिवार के द्वारा कम्बल खरीदने का उल्लेख मिलता है। जैसे 300 कम्बल, 200 कम्बल तथा 1000 कम्बल आदि मंगवाने का उल्लेख मिलता है।

नागौर में दो तरह के कम्बल मिलने का उल्लेख मिलता है जिसमे सूत के तार वाले तथा बिना सूत के तार वाले कम्बल मिलते थे।[15]

ओसियां के कम्बल व चादरे दूर-दूर तक प्रसिद्व थे। परवाने से पता चलता है कि व्यापारी सन्तोखचंद विनपचंद की जालोर व जोधपुर में पश्मीना की दुकान थी।[16]

सूतली, काष्ठ उद्योग

सूतली व काष्ठ उद्योग भी प्रमुख उद्योग में से थे क्योंकि ये भी रोजमर्रा में प्रयोग में लाई जाती थी। बही व ख्यातों से पता चलता है कि नागौर परगने में पट्टी के गांवों में मूंज अधिक पैदा होती थी। अणदपुर परगने से सूत मंगवाने का वर्णन मिलता है।[17] डीडवाणा, पचपदरा से भी मूंज मंगवाई गई थी। इसका वर्णन भी मिलता है।

काष्ठ उद्योग भी बहुत महत्वपूर्ण था। लकड़ी का काम खाती जाति के लोगो के द्वारा किया जाता है। लकड़ी से खिलौने, दरवाजे, खिड़किया, नांवे, कुर्सी, बन्दूक, श्रृंगार पेटियां अनेक समान बनाया जाता था। बही से ज्ञात होता है कि राजपरिवार के लिए सोजत से 100 नग चक्रिया, 70 नग जुणजुणिया, 25 नग चटपटा री जोड़ी तथा पासवान जी गुलाबरायजी के लिए 40 नग काठ के खिलौने, 10 झुणझुणिया, 20 चक्रिया, 5 चटपटा री जोड़ी आदि मंगवाने की जानकारी बहियों में मिलती है।[18]

अन्य उद्योग

हाथी दाँत का उद्योग

हाथी दाँत से चूड़ियां, दस्तबंद, तलवार की मूठें, खिलोने, चारपाई, साज-सज्जा का विभिन्न सामान अदि बनाए जाते थे। हाथी दाँत के खिलौने बनाने के लिए नागौर व सोजत प्रसिद्व थे। राजपरिवार मे उपयोग हेतु बहुत ही सुन्दर व कलात्मक खिलौने नागौर मे बनाए गए थे। बहियो में नागौर से हाथी दाँत के बहुसंख्य खिलौने जोधपुर मंगवाए जाते थे। नागौर की तरह ही सोजत से भी हाथी दाँत के आभूषण व खिलौने मंगाने की जानकारी बहियों से प्राप्त होती है। हाथी दाँत के बर्तन, छल्ले, पंखे की डंडिया व कलम बनाने में मेड़ता अधिक प्रसिद्व था।[19]

चमड़ा उद्योग

चमड़ा उद्योग भी प्रमुख था, इस कार्य को मोची व चमार करते थे। जोधपुर के मुस्लिम कारीगरों द्वारा चमड़े के बक्से व कपड़े रखने हेतु जामदानिया बनाइ जाती थी। चमड़े के समान की बिक्री के लिए बड़े कस्बों में 'कटला' नाम से एक बजारा भी होता था।

धातु के बर्तन

पीतल, तांबा व कांस्य के दैनिक उपयोग के बर्तन भी मारवाड़ में अच्छे बनते थे। इन धातुओं से बर्तन ठठारा व कसारा जाति के लोग बनाते थें। मारवाड़ के डीडवाणे व पाली मे अधिक बसे हुए थे। पीतल को ढालने वाले भरावे कहे जाते तथा पचपदरा में इनकी संख्या अधिक थी। कांसी व पीतल के बर्तन लोग स्वंय ही बनाते थे। जोधपुर के गांव सथलाणे की थालिया व कटोरिया प्रसिद्व थी।

मेड़ता खस के पंखे कनात, डेरा, रावटी, हुक्का सटक, रकाबी, प्याला, सुराही, गिलास, पानादानी, मिट्टी के खिलौने बनाने के कार्य के लिए प्रसिद्व था।

चूड़ी उद्योग

चूडियां प्रत्येक वर्ग की स्त्रियों में लोकप्रिय थे। इस उद्योग में चुडींगर व लखारा काम करते थे। लाख की अधिकांशत मुल्तान से आए लाख से बनती थी। लाख की बनी चुडिया मुख्यतः साधारण या निम्नवर्गीय स्त्रियां पहनती थी।

पत्थर उद्योग

मारवाड़ में पत्थर उद्योग का प्रमुख केन्द्र मकराना था। उच्च श्रेणी का सफेद संगमरमर मकराना में प्रचुरता में उपलब्ध था। जिससे मकराना पूरे देश में प्रसिद्व था।[20] विश्व प्रसिद्व आगरा का ताजमहल मकराना के संगमरमर से ही बना है। बही में महाराजा विजयसिंह ने मकराणा का पत्थर भेजने की व्यवस्था कराई थी।

इस प्रकार सुगन्ध उद्योग, बारूद उद्योग, रस्सी उद्योग आदि भी प्रमुख उद्योग थे।

इस प्रकार मारवाड़ के प्रमुख उद्योगो से रोजगार मिल जाता था कुछ घरेलू उद्योग भी थे जिनमे रोजमर्रा में काम आने वाली वस्तुओं की पूर्ति होती थी।

REFERENCES

1. शर्मा जी.एन सोशल लाइफ इन मेडीवल राजस्थान, पृष्ठ – 175

2. व्यास आर.पी. राजस्थान का वृहत इतिहास, खण्ड प्, पृष्ठ 436-38

3. मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग प्, पृष्ठ 397

4. व्यासआर.पी. राजस्थान का वृहत इतिहास, खण्ड प्, पृष्ठ 436

5. राजस्थान गजेटियर, भाग 3 अ, पृष्ठ 151-52

6. टोड एनाल्स भाग 2, पृष्ठ - 132-33

7. हकीकत बही न. 3 इमेज न. 158-159 संवत 1835, रा.रा.म बीकानेर

8. सनद परवाना बही न. 1 संवत 1820-21

9. सनद परवाना बही न. 14, पंत्राक 138, संवत 1831, म.मा.पु.प्र. जोधपुर

10. डॉ. विमलेश राठौड़, 18 वीं शताब्दी मे राजस्थान का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन, पृष्ठ 262

11. मजमूए हालात राज मारवाड़, 1883-84, पृ. 126

12. मजमूए हालात राज मारवाड़, 1883-84, पृ. 115

13. मजमूए हालात राज मारवाड़, पृ. 72, 126

14. मजमूए हालात राज मारवाड़, 1883-84, पृ. 18

15. सनद परवाना बही न. 13, पंत्राक 24, इमेज 47, संवत 1830

16. खास रूक्का परवाना बही न. 1 इमेज न. 109 संवत 1838

17. सनद परवाना बही न. 1, संवत 1820-21, पृ 142, 92, 148

18. सनद परवाना बही न. 25 इमेज न. 509 संवत 1838

19. मजमुए हालात पृ – 19

20. इम्पिरियल गजेटियर पृ - 53